Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 10.02.17 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

आज दुनया को वास्तविक इस्लाम यदि कोई सिखा सकता है तो वही सिखा सकता है जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना तथा आपके माध्यम से इस्लाम की वास्तविकता को पहचाना

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

दुनया में अधिकांशतः देखने में आता है कि दुनयादारी में इंसान डूबता चला जा रहा है। सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति के लिए एक प्रकार का संघर्ष हो रहा है, एक दौड़ लगी हुई है। ख़ुदा तआला को तथा उसके दीन को द्वित्तीय श्रेणी में रखा जाता है बल्कि ऐसे दीनदार हैं, और उनकी संख्या बढ़ रही है जो अल्लाह तआला के अस्तित्व के ही इनकारी हैं तथा दीन को एक व्यर्थ की चीज़ (नऊज़ु बिल्लाह) समझते हैं परन्तु इस ज़माने में ऐसे भी हैं जो अल्लाह तआला की तलाश में हैं, जो अल्लाह तआला की ओर ले जाने वाले धर्म की खोज में हैं, जो अल्लाह तआला के साथ सम्बंध स्थापित करना चाहते हैं, जो सत्यधर्म एवं दीन को पहचानना चाहते हैं, सत्यधर्म को पहचानकर उसमें शामिल होना चाहते हैं, इसके लिए दुआएँ करते हैं, बेचैन होते हैं तथा निःसन्देह जब एक दर्द के साथ नेक बन्दे इस प्रयास में हों तो फिर अल्लाह तआला भी उनका मार्गदर्शन फ़रमाता है, उन्हें सीधी राह दिखाता है। विभिन्न माध्यमों से उनकी संतुष्टि तथा वास्तविक दीन को समझने के सामान पैदा करता है।उनके ईमान और ज्ञान में वृद्धि करता है। इस ज़माने में अल्लाह तआला की निकटता प्राप्ति तथा उसके दीन को समझने के लिए अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक को मसीह मौऊद तथा मेहदी मअहूद का स्तर देकर भेजा और दुनया को कहा कि अपनी सच्ची और वास्तविक तड़प एवं संतुष्टि के सामान करने के लिए मसीह मौऊद की बैअत में आओ, अल्लाह तआला की निकटता के मार्ग प्राप्त करो, अपनी इबादतों की वास्तविकता को पाओ, अपनी दुआओं की क़बूलियत के दृश्य देखो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस समय मैं कुछ इस प्रकार की घटनाएँ बयान करूंगा कि किस प्रकार ख़ुदा तआला केवल अपनी कृपा से लोगों की हिदायत के सामान करता है।

अमीर साहब गैम्बिया एक घटना का वर्णन करते हैं कि निया मीना ईस्ट डिस्ट्रिक्ट के गाँव की एक महिला सिस्टर कानीफ़ाटी जिनकी आयु 65 वर्ष है, पिछले दस वर्षों से पाँव के रोग में ग्रस्त थीं तथा कहीं से भी इसका इलाज नहीं हो रहा था। इस रोग के कारण वे चलने फिरने में भी असमर्थ थीं। इलाज के लिए अपने गाँव से दूर बनसंग इलाक़े में गईं। जहाँ संयोगवश उन्हें एम टी ए पर मेरा ख़ुत्बः सुनने का अवसर मिल गया। वह महिला जब अपने गाँव वापस आई तो सपने में उन्हें बताया गया कि तुमने टी वी पर जिसको देखा था, उसी के पीछे चलो क्यूँकि वह सत्य और मुक्ति का मार्ग तुम्हें बता रहा है। इस प्रकार उस महिला ने इस सपने के बाद बैअत कर ली। बैअत करने की देर थी कि उनके पाँव का रोग जाता रहा, इस कारण से उनके ईमान में बड़ी वृद्धि हुई तथा अब वे पूरे गाँव में तबलीग़ करती हैं। लोगों को बताती हैं कि किस प्रकार उनका रोग अहमदिया जमाअत में शामिल होने की बरकत से दूर हो गया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- जिसे इस प्रकार का व्यक्तिगत अनुभव हुआ हो, निःसन्देह वह अपने ईमान में सुदृढ़ता प्राप्त करता चला जाता है। मुझे कई लोग पत्र लिखते हैं कि हमने जिस प्रकार अल्लाह तआला की ओर से संतोष पाकर तथा निशान देखकर बैअत की है, हमें हमारे ईमानों से कोई भी नहीं हिला सकता, हमें किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। कुछ लोग विरोध में उस सीमा तक डिठाई पर उतर आते हैं कि बुद्धिमानी की बात सुनना ही नहीं चाहते परन्तु ऐसे भी हैं जो अहंकार में बढ़े हुए नहीं, जिनमें कुछ मात्रा मानवता की है तो ऐसे लोगों का फिर अल्लाह तआला मार्गदर्शन फ़रमाता है। यदि वे इस मार्गदर्शन से लाभ प्राप्त कर लें तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के उत्तराधिकारी बन जाते हैं।

ऐसी ही एक घटना सीरिया के एक व्यक्ति अहमद साहब की है। पहले तो वह विरोध में बढ़ा हुआ था परन्तु फिर वास्तविकता जानने के लिए अल्लाह तआला से मार्गदर्शन पाने का उसे विचार आया। कहते हैं कि अहमदियों के साथ मेरे सम्बंध थे, उठना बैठना था। बाहर मिलते थे अथवा मेरे घर में भी आ जाते थे। मैं बहुत सी बातें मानता था परन्तु मसीह की मृत्यु पर आकर अटक जाता था। इसका कारण यह था कि मैं एक लम्बे समय से मसीह के आसमान से उतरने की प्रतीक्षा में था तथा मसीह की सेना में शामिल होकर बैतुल मुक़द्दस को स्वतंत्र कराने की अभिलाषा मन में लिए हुए था। मसीह की मृत्यु के विषय में सुनकर मेरे जिहाद के सारे सपने चूर चूर हो गए। मसीह आसमान से नहीं उतरेगा तो मैं जिहाद किस प्रकार करूंगा? कहते हैं, एक दिन मेरे घर में कुछ अहमदी दोस्त बैठे हुए थे, उनमें मोअतज़िल क़ज़ाक़ साहब भी थे। इस बीच जो मसीह की मौत पर बात चीत शुरु हुई तो मैंने कहा तुम अहमदियों को ख़ुदा का वासता देकर कहता हूँ कि आज के बाद मसीह की मौत के शीर्षक पर मुझसे बात न करना। इस पर क़ज़ाक़ साहब ने कहा कि मेरा भी एक निवेदन है कि आप ख़ुदा तआला से इस विषय पर मार्गदर्शन के लिए दुआ करें। कहते हैं, उनकी यह बात मुझे बड़ी पसन्द आई और मैंने उसी शाम से ख़ुदा तआला के समक्ष सजदों में रो रोकर दुआ करनी शुरु कर दी। जब रात को सोया तो सपने में देखा कि मैं किसी ऊँचे स्थान की ओर जा रहा हूँ, रास्ते में एक भुरभुरी सी धरती का टुकड़ा आता है जिस पर क़दम रखते ही आभास होता है कि यह मुझे किसी गहरी खाई की ओर धकेल कर ले जा रहा है। इस व्याकुल अवस्था में मुझे एक व्यक्ति कन्धे से पकड़ कर उठा लेता है और कहता है अबुल हसन, अब इस स्थान पर कदापि न आना तथा विश्वास कर लो कि ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो चुकी है। फिर उसने कहा कि लो, अब अपने रास्ते पर चलते रहो। जब मैं जागा तो अपने अहमदी भाई से फ़ोन करके कहा कि मैंने मोअतज़िल क़ज़ाक़ साहब के पास जाना है। हम दोनों मोअतज़िल साहब के घर पहुंचे तो दाख़िल होते ही दीवार पर लगे एक चित्र को देखकर मैं ठिठक कर रह गया और पूछा कि यह किसका चित्र है? उन्होंने बताया कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र है। यह सुनते ही मैंने कहा कि मैं अभी बैअत करना चाहता हूँ क्यूँकि कमरे की दीवार पर लगा चित्र उसी व्यक्ति का था जिसने सपने में मुझे कन्धे से पकड़ कर दलदल जैसी धरती से निकाल कर कहा था कि हज़रत ईसा का निधन हो चुका है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आजकल अनेक लोग हैं जो एम टी ए के माध्यम से भी वास्तविक इस्लाम का परिचय प्राप्त करके अहमदियत में दाख़िल होते हैं। बैनिन के मुबल्लिग़ साहब ने लिखा है कि एक क्षेत्र के चीफ़ जो मुशरिक थे उनको तबलीग़ की गई तो वे अहमदी होकर वास्तविक इस्लाम के अनुसार काम करने लगे। उनके क्षेत्र में एक मस्जिद का उद्घाटन हुआ तो इस अवसर पर उन्होंने जो सम्बोधन किया, उसका कुछ अंश मैं उन्हीं के शब्दों में बयान करता हूँ। वे कहते हैं कि-

मुझे समझ नहीं आती कि ग़ैर अहमदी, अहमदिया जमाअत का क्यूँ विरोध करते हैं। आज अहमदिया जमाअत ही तो इस्लाम का पैग़ाम दुनया के किनारों तक पहुंचा रही है। मैं एक वर्ष पहले तक मुशरिक था और मुशरिकों का राजा था। अहमदिया जमाअत के मुबल्लिग़ ने मेरी सोच को बदल दिया तथा इस्लाम का वास्तविक चेहरा मुझे दिखाया तो मैं इस्लाम में दाख़िल हो गया। यदि अहमदिया जमाअत ईसाईयों तथा मुशरिकों को इस्लाम में ला रही है तो तुम्हें इसमें क्या कठिनाई

है। यह मस्जिद सभी लोगों के लिए खुली है। अल्लाह की इबादत के लिए यदि एक ईसाई भी इस मस्जिद में आएगा तो उसको रोका नहीं जाएगा। तुम लोग विरोध छोड़ो तथा भीतर आकर देखो, यहाँ केवल प्रेम, शांति तथा सदभावना की सीख मिलेगी। अहमदिया जमाअत केवल और केवल दुनया का भला चाहती है। वे साहब कहने लगे कि मेरा दिल चाहता है कि मैं यहाँ मस्जिद के साथ एक मकान बनाऊँ तथा प्रत्येक आने वाले को बताऊँ कि अहमदिया जमाअत ही सच्चा इस्लाम है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- एक ओर तो वे लीडर आलिम हैं जो इस्लाम के नाम पर उपद्रव उत्पन्न कर रहे हैं, अहंकार के मारे हुए हैं। अपने निजि स्वार्थों के लिए मुसलमान से मुसलमान का ख़ून करा रहे हैं दूसरी ओर अल्लाह तआला को किसी मुशरिक की कोई नेकी पसन्द आती है अथवा उस पर अपनी कृपा करता है तो उसे इस्लाम की शिक्षानुसार कार्य करने के दावेदारों के लिए वास्तविक इस्लामी शिक्षा बताने तथा फ़ितना व फ़साद से बचने की शिक्षा देने के लिए खड़ा कर देता है। तो यह है अल्लाह तआला का काम, यदि इंसान विनम्र हो तो उस पर कृपा करता है परन्तु यदि अहंकार में बढ़ा हुआ हो तो लाख वह नमाज़ें पढ़ने वाला है, दुआएँ करने वाला है, अपने आपको नेक समझने वाला है, हाजी है, लेकिन अल्लाह तआला की ओर से हिदायत नहीं मिलती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में जब लोग आते हैं और वास्तविक इस्लाम का स्वाद चखते हैं तो फिर उनकी स्थितियों में क्या बदलाव पैदा होता है, इसके विषय में एक घटना हमारे एक मुबल्लिग़ लिखते हैं कि कैमरून के दौरे के समय एक रिटायर्ड फ़ौजी बैअत करके अहमदिया जमाअत में शामिल हुए। उस फ़ौजी का सम्बंध बेमून क़बीले से है जहाँ के सुलतान पिछले वर्ष ऐम्बेसी वार्षिक समारोह यू.के. में शामिल हुए थे। इस बार जब कैमरून का दौरा किया तो उन साहब से दोबारा मुलाक़ात हुई। उन्होंने कहा कि वे मस्जिद के लिए जमाअत को एक प्लाट देना चाहते हैं। मैं तथा सदर साहब प्लाट देखने गए तो देखा कि उन्होंने उस प्लाट में एक बेसमैन्ट पहले से बनाई हुई है, वहाँ निर्माण चल रहा है। उन्होंने बताया कि मेरे पिता जी जिनका निधन हो चुका है, वे मेरे सपने में आए और उन्होंने कहा कि तुम इस स्थान पर अपना मकान नहीं बल्कि मस्जिद बनाओ। अतः मैंने निर्णय किया कि प्लाट और भवन जमाअत के नाम कर दूँ ताकि जमाअत इस स्थान पर मस्जिद का निर्माण कर सके और यह काफ़ी बड़ा प्लाट है, लगभग एक हज़ार वर्ग मीटर। उन्होंने प्लाट के काग़ज़ात भी जमाअत के नाम कर दिए हैं, इन्शाअल्लाह मस्जिद का निर्माण हो जाएगा।

फिर एक घटना बयान करता हूँ कि किस प्रकार इस्लाम का दर्द रखने वाले, एक दूर सदूर स्थान पर रहने वाले व्यक्ति की दुआ को अल्लाह तआला ने सुना तथा इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को चलाने के लिए एक मुबल्लिग़ को उसके पास भेजा। आईवरी कोस्ट के एक मुबल्लिग़ लिखते हैं कि आईवरी कोस्ट इबंगरो रीजन के एक दूर के गाँव याओ कोरो से सईदू साहब बयान करते हैं कि उनके गाँव में इस्लाम उनके दादा के माध्यम से आया था परन्तु धीरे धीरे लोग इस्लाम से दूर हो गए, यहाँ तक कि इस्लाम का केवल नाम रह गया। सईदू साहब कहते हैं कि मैं प्रायः दुआ करता था कि अल्लाह तआला ऐसी व्यवस्था करे कि गाँव के लोग वास्तविक इस्लाम की शिक्षानुसार कर्म करें। रमज़ानुल मुबारक 2016 के आरम्भ में यह दुआ करते करते मेरी आँखों में आँसू आ गए , बड़े दर्द के साथ मैंने दुआ की। इसके एक दो दिन बाद ही अहमदिया जमाअत के मुबल्लिग़ हमारे गाँव में आए तथा जमाअत का परिचय कराया। यह बात मेरे ईमान को अत्यधिक बढ़ाने वाली थी कि हमारे इस दूर के गाँव में भी कोई दाअी इलल्लाह इस प्रकार इस्लाम के पुर्नोद्धार का सन्देश लेकर आया है। सिलसिले के मुबल्लिग़ के इस दौरे के समय गाँव के 55 लोग बैअत करके अहमदिया जमाअत में शामिल हुए तथा इस प्रकार अहमदिया जमाअत के माध्यम से आज हम इस्लाम की वास्तविक शिक्षानुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- तनिक विचार करें कि एक ओर तो प्रगतिशील देशों में रहने वाले लोग हैं, दीन को भुलाकर सांसारिक सुविधाओं के लिए व्याकुल हैं तथा दूसरी ओर एक दूर सदूर गाँव का रहने वाला एक व्यक्ति अफ़्रीक़ा के देश में, सम्भवतः जिसके गाँव तक पक्की सड़क भी नहीं जाती, जो दुनया की समृद्धि से भी वंचित है परन्तु एक तड़प दिल

में रखे हुए है, अल्लाह तआला से यह दुआ करता है कि इस्लाम की शिक्षा यहाँ से लुप्त हो रही है, किसी को भेज जो हमें इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर पुनः स्थापित करे और फिर अल्लाह तआला के विधान के अनुसार मसीह-ए-मुहम्मदी का एक ग़ुलाम उस क्षेत्र तक पहुंचता है तथा उनको इस्लाम के बारे में बताता है क्यूँकि आज दुनया को वास्तविक इस्लाम यदि कोई सिखा सकता है तो वही सिखा सकता है जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना तथा आपके माध्यम से इस्लाम की वास्तविकता को पहचाना।

अतः हममें से प्रत्येक का यह काम है कि दर्द के साथ इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को दुनया में फैलाने तथा प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए दुआएँ भी करें तथा प्रयास भी करें। कहने को तो अनेक विभाग हैं, तंज़ीमें हैं, कुछ समुदाय हैं जो इस्लाम के नाम पर काम कर रहे हैं। तबलीग़ी जमाअत भी है किन्तु लगभग प्रत्येक अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के पीछे पड़ी हुई है। विरोध में एक दूसरे पर कुफ्र के फ़त्वे देने को भी तत्पर रहते हैं, उन्होंने क्या इस्लाम की सेवा करनी है। यह काम आज मसीह-ए-मुहम्मदी के ग़ुलामों का ही है कि इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाएँ। हमारा काम तो अल्लाह तआला स्वयं आसान कर रहा है, किसी का सपने के द्वारा मार्गदर्शन कर रहा है तो किसी का किसी अन्य माध्यम से। यदि हमने बैअत का हक़ अदा करना है तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहायकों में से बनने का प्रयास करना चाहिए। हमें बैअत के बाद कैसा होना चाहिए, इसके विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि-

बैअत रस्मी लाभ नहीं देती, ऐसी बैअत में भागीदार होना कठिन होता है। फ़रमाया कि उसी समय भागीदार होगा जब अपने अस्तित्व को त्याग कर पूर्णतः प्रेम एवं श्रद्धा से उसके साथ हो जावे। मुनाफ़िक़ (पाखन्डी) लोग, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सच्चा सम्बंध न होने के कारण अन्ततः ईमान से वंचित रहे। उनमें सच्ची मुहब्बत एवं श्रद्धा पैदा नहीं हुई इस लिए ज़ाहिरी ला इलाहा इल्लल्लाह उनके काम न आया। इन सम्बंधों को बढ़ाना आवश्यक बात है। जहाँ तक सम्भव हो उस इंसान अर्थात मुर्शिद (गुरु) के रंग में रंगीन हो, तरीक़ों में तथा आस्था में। जिसको माना है, जैसा वह है, वैसा स्वयं बनने का प्रयास करो। फ़रमाया- जीवन का कोई भरोसा नहीं, जल्दी ही सत्यकर्म एवं इबादतों की ओर झुकना चाहिए तथा सुबह से लेकर शाम तक हिसाब करना चाहिए कि मैं किस प्रकार जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।

अल्लाह तआला नए आने वालों को भी ईमान और विवेक में बढ़ाए, आस्था एवं कर्मों की दृष्टि से वे प्रगति करने वाले हों। जो ईमान की चिंगारी अल्लाह तआला ने उनके दिलों में लगाई है, अहमदियत और वास्तविक इस्लाम क़बूल करने के बाद वे इसमें बढ़ते चले जाएँ। शैतान कभी भी उन्हें पथभ्रष्ट करने वाला न हो और अल्लाह तआला उन्हें दृढ़ संकल्प भी प्रदान करे तथा हम जो पुराने और जन्मजात अहमदी हैं, हमें भी अल्लाह तआला अपने ईमानों को बढ़ाने तथा हर समय उसमें प्रगति करने का सामर्थ्य प्रदान करता चला जाए। अल्लाह तआला अपने साथ सम्बंध में बढ़ने की हमें भी तौफ़ीक़ दे। कभी किसी नए आने वाले के लिए कोई ठोकर का कारण न बनें तथा सदैव दुनया को सीधा मार्ग दिखाने वाले हों। इस बात पर ख़ुश न हों कि हम पुराने अहमदी हैं अपितु बैअत का उद्देश्य पूरा करने वाले हों। सांसारिक सुविधाएँ हमारा लक्ष्य न हों बल्कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता हो और हम शीघ्र अतिशीघ्र वास्तविक इस्लाम को दुनया में फैलता हुआ देखें ताकि दुनया को बता सकें कि तुम जिसे दुनया के लिए हानिकारक समझते हो वही वास्तव में तुम्हारे लिए तथा विश्व के लिए मुक्ति का मार्ग है।